Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2018 = 6.371, www.srjis.com
PEER REVIEWED JOURNAL, JULY-AUG, 2018, VOL- 6/46

बुनियादी तालीम व सामान्य विद्यालयों के सीखने–सिखाने की शैली का तुलनात्मक अध्ययन (A Comparative Study of Teaching-Learning Style in Buniyadi Talim and Normal School)

अनूप कुमार सिंह[1] & प्रो. अरबिन्द कुमार झा[2]

[1]पी एच. डी. शोधार्थी, शिक्षा विभाग(बिड़ला परिसर), हेमवती नन्दन बहुगुना गढ़वाल विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय), श्रीनगर–गढ़वाल,उत्तराखण्ड, anoop.281190@gmail.com

[2]अधिष्ठाता एवं विभागाध्यक्ष, शिक्षा विद्यापीठ, बाबासाहब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय), लखनऊ–उत्तर प्रदेश

Abstract

इस लघुशोध अध्ययन का उद्देश्य महाराष्ट्र राज्य के वर्धा जनपद के सेवाग्राम नामक स्थान पर स्थित बुनियादी तालीम विद्यालय (आनन्द निकेतन विद्यालय) व सामान्य विद्यालयों के रूप में रत्नीबाई विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की सीखने–सिखाने की शैली का तुलनात्मक अध्ययन करना है। इसके अध्ययन के लिए प्रतिदर्श के रूप में दोनों प्रकार के विद्यालयों में से 30–30 विद्यार्थियों एवं 10–10 शिक्षकों का चयन उद्देश्यपरक विधि द्वारा चयन किया गया। इन दोनों प्रकार के विद्यालयों की सीखने–सिखाने की शैली के तुलनात्मक अध्ययन के लिये स्वनिर्मित अधिगम शैली प्रश्नावली, कक्षा अवलोकन चेकलिस्ट और शिक्षक साक्षात्कार प्रश्नावली का उपयोग किया गया। प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण के संदर्भ में गुणात्मक तथा मात्रात्मक दोनों प्रकार की प्रविधियों का उपयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषणोपरांत यह पाया गया कि दोनों प्रकार के विद्यालयों में मात्रात्मक रूप से देखने में तो दोनों विद्यालयों में लगभग समानता मिलती है परन्तु गुणात्मक दृष्टि से देखने पर दोनों प्रकार के विद्यालयों में भिन्नता देखने को मिलती है।

प्रमुख शब्दावली– *बुनियादी तालीम,सीखने–सिखाने की शैली।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना–

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के निर्माण की आधारशिला है। शिक्षा पद्धति एवं समाज व्यवस्था का घनिष्ठतम सम्बन्ध है। शिक्षा की धुरी शिक्षक और शिक्षार्थी हैं। एक विशिष्ट उद्देश्य को सामने रखकर ही वह बालक के निर्माण में प्रवृत्त होती है। सीखने–सिखाने की अन्तःक्रिया शिक्षक एवं शिक्षार्थियों के मध्य लगातार होती रहती है। अब अधिगम की शैली को किस प्रकार से प्रभावी बनाया जाये। यह एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। सीखने–सिखाने की शैली में विद्यालयी वातावरण, सामाजिक वातावरण का प्रभाव देखने को मिलता है। उदाहरण के लिए सी.बी.एस.ई. आधारित, विद्यालयों मे शिक्षकों के सिखाने की

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

शैली परम्परागत विद्यालयों से भिन्न होती है। जहाँ नयी तालीम एक अलग प्रकार की पद्धति है। जो गांधी जी के तीन एच. के सिद्धान्त (हेड, हैण्ड व हार्ट) पर आधारित है। यहां के शिक्षण पद्धति अन्य विद्यालयों से भिन्न है, यहाँ की शिक्षण पद्धति बालक के व्यावहारिक जीवन से जोड़ते हुये हस्त कौशल, हस्तशिल्प आदि माध्यमों से शिक्षा प्रदान करती है। गांधी जी द्वारा परिकल्पित ग्राम स्वराज में शिक्षा को समाज परिवर्तन का एक सक्षम अंग माना गया है क्योंकि शिक्षा जिस प्रकार मानव मन को मोड़ती है। मानव उधर ही मुड़ जाता है इसलिए यह आवश्यक जान पड़ता है, कि स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए स्वस्थ शिक्षा पद्धति का विकास हो। गांधी जी इसके लिए जो शिक्षा पद्धति की रूपरेखा बनायी थी। वह बुनियादी तालीम या वर्धा शिक्षा पद्धति के नाम से सुविदित है। जो पूरी तरह भारतीय योजना है।

शाध का औचित्य/सार्थकता–

इस लघुशोध के द्वारा सीखने–सिखाने की विभिन्न प्रकार की शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं को पता करने में मदद मिलती है। इसके अनुसार सामाजिक परिवेश के अनुसार योजना निर्माण हा सके। इस प्रकार के लघुशोध से अन्य विद्यालय भी लाभान्वित हो सकेंग। इसलिए यह शोध आवश्यक है। शिक्षा को सचमुच सार्थक होने के लिए विद्यार्थी और शिक्षक दोनो के अनुकूल होना चाहिए। जहाँ गांधी जी मानते थे कि बच्चों को कोई उपयोगी व्यवसाय सिखाना केवल जीविकोपार्जन के साधन के रूप में ही अनिवार्य नहीं है, बल्कि उनकी मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक योग्यता का परिष्कार करने के लिए भी अनिवार्य है। दूसरी ओर कुछ ऐसी संस्थायें हैं जहां आज देखने को मिलता है कि पुस्तकें रटने को ही पढ़ाई कहते है और यह नीरस, घुटन भी कक्षा तक ही सीमित रहती है। जो बच्चे की जीवन–शक्ति उसके ओज और उत्साह को नष्ट कर रही है। जिससे बच्चे की स्वाभाविक रचनात्मकता और पहल शक्ति मोटी–मोटी पाठ्यपुस्तकों और अनावश्यक गृहकार्य के बोझ तले दम तोड़ती दिखाई दे रही है और प्रतिभाओं का ह्रास हो रहा है।

मेरी धारणा है कि शिक्षा को सही अर्थ प्रभावी अर्थात सीखने–सिखाने की प्रक्रिया आनंदायक अनुभव होना चाहिए। ऐसा अनुभव जो बच्चे उत्सुकता से स्कूल की प्रतिक्षा करें। शिक्षा किताबी विद्या और पाठ्येतर क्रियाकलापों का सुसंगत संतुलन होना चाहिए। शिक्षकों को अपनी बहुवादी विरासत और अपनी परंपरा के शाश्वत मूल्यों की गंभीर जानकारी होनी चाहिए, ताकि वे विद्यार्थियो को सही तरह से सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का निर्वहन कर सके। एक ओर जहां बुनियादी तालीम व्यावहारिक शिक्षा प्रदान करने की बात करता है। वहीं दूसरी ओर आज की जो आधुनिक शिक्षण व्यवस्था है वो कहां तक बच्चे के लिए उपयुक्त है और इन बातो को ध्यान में रखा जाये जिससे शिक्षा प्रणाली का रूप दिया जा सके।

शोध प्रश्न–

1. बुनियादी तालीम व सामान्य विद्यालयों के विद्यार्थियों की अधिगम शैली किस प्रकार की हैं?
2. बुनियादी तालीम व सामान्य विद्यालयों के विद्यार्थियों की अधिगम शैली में क्या अन्तर हैं?

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

3. बुनियादी तालीम व सामान्य विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण शैली किस प्रकार की है?
4. बुनियादी तालीम व सामान्य विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण शैली में क्या अन्तर है?
5. बुनियादी तालीम व सामान्य विद्यालय किन–किन चीजों के सीखने–सिखाने में वरीयता देते हैं?

अध्ययन के उद्देश्य–

1. बुनियादी तालीम व सामान्य विद्यालयों क विद्यार्थियों की अधिगम शैली का अध्ययन करना।
2. बुनियादी तालीम के विद्यालयों व सामान्य विद्यालयों में शिक्षकों की शिक्षण शैली का अध्ययन करना।
3. बुनियादी तालीम के विद्यालयों एवं सामान्य विद्यालयों में प्रयुक्त शिक्षण–अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनायें–

Ho-1– बुनियादी तालीम व सामान्य विद्यालयों के विद्यार्थियों की अधिगम शैली क मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

Ho-1.1– बुनियादी तालीम व सामान्य विद्यालयों के विद्यार्थियों की दृश्य–सम्बन्धी अधिगम शैली के मध्य कोईसार्थक अन्तर नहीं है।

Ho-1.2– बुनियादी तालीम व सामान्य विद्यालयों के विद्यार्थियों की श्रवण–सम्बन्धी अधिगम शैली क मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

Ho-1.3– बुनियादी तालीम व सामान्य विद्यालयों के विद्यार्थियों की स्पर्श–सम्बन्धी अधिगम शैली क मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

Ho-1.4– बुनियादी तालीम व सामान्य विद्यालयों के विद्यार्थियों की समूह–सम्बन्धी अधिगम शैली क मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

Ho-1.5– बुनियादी तालीम व सामान्य विद्यालयों के विद्यार्थियों की व्यक्तिगत–सम्बन्धी अधिगम शैली क मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध का महत्त्व–

वर्तमान परिदृश्य में शिक्षण व्यवस्था की कमियों को देखते हुए। शिक्षण व्यवस्था की कमियाँ जो रटन्त शिक्षा प्रणाली पर जोर देती है। जो की अरुचि से प्रेरित शिक्षक अथार्टी आधारित शिक्षण प्रणाली दोष पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया व मूल्यांकन प्रक्रिया जो कि विद्यार्थियों को कौशल विकास के स्थान पर विद्यार्थियों में पाठ्य पुस्तक आधारित शिक्षण प्रक्रिया पर जोर देती है। शिक्षा का मुख्य उद्वेश्य, शिक्षा जीवन जीने की कला को सिखाती है। जबकि वर्तमान परिदृश्य में शिक्षा म औसत का अभाव देखा जाता है। इन बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुये गांधी जी की नयी तालीम जो कि ज्ञान के साथ–साथ कौशल पर भी जोर देती है का अध्ययन करने का चुनाव किया गया।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

शोध योजना–

प्रस्तुत लघुशोध में गुणात्मक एवं मात्रात्मक शोध को आधार माना गया है किसके लिए सर्वेक्षणात्मक अध्ययन विधि द्वारा किया गया है।

प्रतिदर्श चयन–

प्रस्तुत लघुशोध के लिए शोधकर्ता द्वारा अपने उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुये। उद्वश्यपरक विधि का प्रयोग करते हुये। प्रतिदर्श के रूप में महाराष्ट्र राज्य के वर्धा जिले के सेवाग्राम स्थित बुनियादी तालीम का विद्यालय (आनन्द निकेतन विद्यालय, सेवाग्राम, वर्धा–महाराष्ट्र) व सामान्य विद्यालय (रत्नीबाई विद्यालय, वर्धा–महाराष्ट्र) से यथाचित न्यादर्श का चयन किया गया है। जिसमें दोनों प्रकार के विद्यालयों से कक्षा 8वीं में पढ़ाने वाले 10–10 शिक्षक तथा 30–30 विद्यार्थियों को लिया गया है।

शोध उपकरण–

प्रस्तुत लघुशोध कार्य में प्रदत्तों के संकलन के लिए स्वनिर्मित अधिगम शैली प्रश्नावली, कक्षा अवलोकन चेकलिस्ट और शिक्षक साक्षात्कार प्रश्नावली का उपयोग किया गया।

सांख्यिकीय प्रविधियां–

प्रयोज्यों से संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए मात्रात्मक विधि (मध्यमान, मध्यांक, मानक विचलन, मानक त्रुटि तथा टी–परीक्षण) तथा गुणात्मक विधि का प्रयोग किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण, व्याख्या एवं निष्कर्ष–

प्रस्तुत लघुशोध अध्ययन में प्राप्त प्रदत्तों को विश्लेषित करके उसकी व्याख्या एवं निष्कर्ष को निम्न प्रकार वर्णित किया गया है–

Ho-1– बुनियादी तालीम व सामान्य विद्यालयों के विद्यार्थियों की अधिगम शैली के मध्य तुलनात्मक अध्ययन हेतु तालिका–1

प्रतिदर्श	संख्या (N)	मध्यमान(M)	मानक विचलन (S.D)	टी–मान (t)	सार्थकता स्तर	सारणी मान
बुनियादी तालीम विद्यालय की अधिगम शैली	30	147.4	16.9265	0. 6614	0.05	2.00
सामान्य विद्यालय की अधिगम शैली	30	144.233	20.0294			

प्रस्तुत तालिका–1 से स्पष्ट है कि गणना से प्राप्त t–परीक्षण का मान 0.6616 है, जो कि मुक्तांश df=58 के t–परीक्षण मान के 0.05 सार्थकता स्तर क लिए सारणी मान 2.00 से कम है। अतः बुनियादी तालीम व सामान्य विद्यालयों के विद्यार्थियों की अधिगम शैली के मध्य कोई साथक अन्तर नहीं है। इसलिए परिणामतः हमारी शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

Ho-1.1–बुनियादी तालीम व सामान्य विद्यालयों के विद्यार्थियों की दृश्य–सम्बन्धी अधिगम शैली के मध्य तुलनात्मक अध्ययन हेतु तालिका–2

प्रतिदर्श	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D)	टी–मान (t)	सार्थकता स्तर	सारणी मान
बुनियादी तालीम विद्यालय की दृश्य–सम्बन्धी अधिगम शैली	30	29.1	16.9265	0.296	0.05	2.00
सामान्य विद्यालय की दृश्य–सम्बन्धी अधिगम शैली	30	28.73	20.0294			

प्रस्तुत तालिका–2 से स्पष्ट है कि गणना से प्राप्त t–परीक्षण का मान 0.296 है, जो कि मुक्तांश df=58 के t–परीक्षण मान के 0.05 सार्थकता स्तर के लिए सारणी मान 2.00 से कम है। अतः बुनियादी तालीम व सामान्य विद्यालयों के विद्यार्थियों की दृश्य–सम्बन्धी अधिगम शैली क मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है। इसलिए परिणामतः हमारी शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

Ho-1.2–बुनियादी तालीम व सामान्य विद्यालयों के विद्यार्थियों की श्रवण–सम्बन्धी अधिगम शैली के मध्य तुलनात्मक अध्ययन हेतु तालिका–3

प्रतिदर्श	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D)	टी–मान (t)	सार्थकता स्तर	सारणी मान
बुनियादी तालीम विद्यालय की श्रवण–सम्बन्धी अधिगम शैली	30	28.7	3.93	0.7768	0.05	2.00
सामान्य विद्यालय की श्रवण–सम्बन्धी अधिगम शैली	30	29.53	4.36			

प्रस्तुत तालिका–3 से स्पष्ट है कि गणना से प्राप्त t–परीक्षण का मान 0.7768 है, जो कि मुक्तांश df=58 के t–परीक्षण मान के 0.05 सार्थकता स्तर के लिए सारणी मान 2.00 से कम है। अतः बुनियादी तालीम व सामान्य विद्यालयों के विद्यार्थियों की श्रवण–सम्बन्धी अधिगम शैली क मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है। इसलिए परिणामतः हमारी शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

Ho-1.3–बुनियादी तालीम व सामान्य विद्यालयों के विद्यार्थियों की स्पर्श–सम्बन्धी अधिगम शैली के मध्य तुलनात्मक अध्ययन हेतु तालिका–4

प्रतिदर्श	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D)	टी–मान (t)	सार्थकता स्तर	सारणी मान
बुनियादी तालीम विद्यालय की स्पर्श–सम्बन्धी अधिगम शैली	30	33.6	3.4312	3.0218	0.05	2.00
सामान्य विद्यालय की स्पर्श–सम्बन्धी अधिगम शैली	30	29.93	5.6917			

प्रस्तुत तालिका–4 से स्पष्ट है कि गणना से प्राप्त t–परीक्षण का मान 3.0218 है, जो कि मुक्तांश df=58 के t–परीक्षण मान के 0.05 सार्थकता स्तर के लिए सारणी मान 2.00 से अधिक है। अतः बुनियादी तालीम व सामान्य विद्यालयों के विद्यार्थियों की स्पर्श–सम्बन्धी अधिगम शली के मध्य सार्थक अन्तर है। इसलिए परिणामतः हमारी शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

Ho-1.4–बुनियादी तालीम व सामान्य विद्यालयों के विद्यार्थियों की समूह–सम्बन्धी अधिगम शैली के मध्य तुलनात्मक अध्ययन हेतु तालिका–5

प्रतिदर्श	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D)	टी–मान (t)	सार्थकता स्तर	सारणी मान
बुनियादी तालीम विद्यालय की समूह–सम्बन्धी अधिगम शैली	30	29.67	5.256	0.6027	0.05	2.00
सामान्य विद्यालय की समूह–सम्बन्धी अधिगम शैली	30	28.93	4.098			

प्रस्तुत तालिका–5 से स्पष्ट है कि गणना से प्राप्त t–परीक्षण का मान 0.6027 है, जो कि मुक्तांश df=58 के t–परीक्षण मान के 0.05 सार्थकता स्तर के लिए सारणी मान 2.00 से कम है। अतः बुनियादी तालीम व सामान्य विद्यालयों के विद्यार्थियों की समूह–सम्बन्धी अधिगम शैली क मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है। इसलिए परिणामतः हमारी शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

Ho-1.5–बुनियादी तालीम व सामान्य विद्यालयों के विद्यार्थियों की व्यक्तिगत–सम्बन्धी अधिगम शैली के मध्य तुलनात्मक अध्ययन हेतु तालिका–6

प्रतिदर्श	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D)	टी–मान (t)	सार्थकता स्तर	सारणी मान
बुनियादी तालीम विद्यालय की व्यक्तिगत–सम्बन्धी अधिगम शैली	30	26.33	5.274	0.6096	0.05	2.00
सामान्य विद्यालय की व्यक्तिगत–सम्बन्धी अधिगम शैली	30	27.1	4.429			

प्रस्तुत तालिका–6 से स्पष्ट है कि गणना से प्राप्त t–परीक्षण का मान 0.6096 है, जो कि मुक्तांश df=58 के t–परीक्षण मान के 0.05 सार्थकता स्तर के लिए सारणी मान 2.00 से कम है। अतः बुनियादी तालीम व सामान्य विद्यालयों के विद्यार्थियों की व्यक्तिगत–सम्बन्धी अधिगम शैली क मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है। इसलिए परिणामतः हमारी शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

अधिगम शैली का अध्ययन एवं अन्तर–

बुनियादी तालीम विद्यालय में शोधार्थी ने पाया कि विद्यार्थीपढ़कर अधिक सीखते हैं, क्योंकि उन्हें स्वयं से पढ़कर सीखना पसन्द करते हैं, कहानी को सुनने से ज्यादा पढ़ने में वरीयता देकर सीखते हैं, चार्ट, डायाग्राम और मानचित्र से सम्प्रत्यय को समझने में सहायता मिलती है। जिससे बहुत अधिक अच्छे तरह से सीखतें हैं, अभ्यास करके, प्रोजेक्ट को बनाकर, समूह में रहकर अपना कार्य करके, व्यक्तिगत प्रोजेक्ट असाइनमेंट करने में रुचि लेकर, कक्षा चर्चा में भाग लेकर, समूह अध्ययन करके, पाठ्य–सहगामी क्रियाकलाप से सीखते हैं।

जबकि सामान्य विद्यालय में शोधार्थी ने पाया कि शिक्षकों के निर्देशों को सुनकर विद्यार्थी सीखते तो ह पर थोड़ा कम ही सीख पाते हैं, सभी विद्यार्थी पढ़ने से ज्यादा व्याख्यान सुनने में वरीयता या प्राथमिकता देते हैं और सीखने का प्रयास करते हैं, नयी सूचनाओं पर ध्यान देते हैं, न्यूज पेपर पढ़ने की अपेक्षा रेडियो से अधिक सूचना प्राप्त करते हुए सीखते हैं, मुख्य भूमिका अदा करके, समूह कार्य करते

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

हुए, प्रोजेक्ट बनाकर, अकेले अध्ययन करके, पाठ पढ़ाये जाने के दौरान विद्यार्थी शिक्षकों से प्रश्न उत्तर करके सीखते हैं।

आंकडों से प्राप्त अधिगम शैलियों का निष्कर्ष–

बुनियादी तालीम व सामान्य विद्यालयों के विद्यार्थियों की अधिगम शली देखने के लिए मात्रात्मक विधि के माध्यम से आंकडों के विश्लेषण से प्राप्तनिष्कर्ष में देखा कि विद्यार्थियों के मध्य दृश्य सम्बन्धी अधिगम शैली, श्रवण सम्बन्धी अधिगम शैली, समूह सम्बन्धी अधिगम शैली और व्यक्तिगत सम्बन्धी अधिगम शैली के मध्य अन्तर देखने को नहीं मिलता है। दोनो प्रकार के विद्यालयों में स्पर्श सम्बन्धी अधिगम शैली के मध्य सार्थक अन्तर देखने को मिलता है।

शिक्षण शैली का अध्ययन एवं अन्तर–

बुनियादी तालीम के विद्यालय आनन्द निकेतन में शोधार्थी नेनिष्कर्षतः पाया कि शिक्षक विषयी ज्ञान से विद्यार्थियों का मानसिक विकास करते हैं वहीं व्यावहारिक ज्ञान से विद्यार्थी में सर्वांगीण विकास करतेहैं। इसलिए दोनों ही ज्ञानों का होना अनिवार्य मानते हुये दोनो प्रकार के ज्ञान देते हैं। पाठ का पुनरावलोकन किया जाता है। सम्बन्धित पाठ को पढ़ाये जाने के पूरे दिन के अधिगम अनुभवों का ब्यारा शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को दिया जाता है। शिक्षक पाठ का प्रारम्भ पाठ की प्रस्तावना के साथ करते हैं। शिक्षकों के अनुसार बागवानी, सिलाई, नृत्य, कताई–बुनाई, मिट्टी की कारीगरी, क्राफ्ट, कागज से बने हुये खिलौनें, गृहविज्ञान, रसोई, आदि के माध्यम से विद्यार्थियों को हस्तकौशल की शिक्षा दी जाती है एवं इसके साथ–साथ हिन्दी, अंग्रेजी, विज्ञान, भूगोल, इतिहास, गणित, मातृभाषा, चित्रकला आदि विषयों को पाठ्यवस्तु के अन्तर्गत शामिल करके पढ़ाया जाता है। शिक्षकों और विद्यार्थियों के मध्य पाठ पढ़ाये जाने के दौरान प्रश्न–उत्तर के माध्यम से सीखने–सिखाने की प्रक्रिया होती है। शिक्षकों द्वारा सूचना और संचार प्रोद्योगिकी उपकरण और अनुप्रयोगों को व्यवहार में लाकर सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को रोचक बनाकर अन्तःक्रिया करते हैं। शिक्षण के दौरान छात्रों के व्यक्तिगत अनुभवों तथा विचारा को बढ़ावा दिया जाता है। शिक्षक द्वारा विद्यालय में वाचन, प्रश्नोत्तर, मॉडल, समूह कार्य, चर्चा–परिचर्चा, दृश्य–श्रव्य सामग्री के माध्यम से जीवन से जुड़कर कक्षा शिक्षण को प्रभाव शाली बनाते हुए अन्तःक्रिया करते हैं। शिक्षकों द्वारा चार्ट, खिलौने, संगणक, इंटरनेट, ऊर्जा से जुड़े मॉडल, जैव विविधता से जुड़े हुए कुछ मॉडल, प्रयोगशाला में आपदा प्रबन्धन से जुड़े हुये कुछ मॉडलों के माध्यम से, दृश्य–श्रव्य सम्बन्धी विधियाँ, जीवन से जुड़े हुये साधनों, स्थानिक सन्दर्भ शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य, बौद्धिक स्तर की परिपक्वता, इच्छा विषय सामग्री का स्वरूप विधि, समय, वातावरण, प्रेरणा, शिक्षक का व्यवहार, मौखिक व लिखित अध्ययन विधियों से, पूर्व ज्ञान, समवाय–विधि, प्रोजेक्ट–मॉडल विधियाँ, चार्टस, इंटरनेट, प्रश्नावली, सीखने–सिखाने की समयोचित कार्यशाला का आयोजन करके सीखने–सिखाने के साधनो और माध्यमों पर विशेष जोर देने वाली विधियों के माध्यम से सीखने–सिखाने की क्रिया होती है। बुनियादी तालीम के विद्यालय में अनुशासन पर, सफाई कार्य, बागवानी कार्य, शिल्प कार्य, खाना बनाने,

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

क्राफ्ट, नृत्य व सगीत, नयी तकनीकों जैसे– प्रोजेक्टर, कम्प्यूटर, ऐप्स, चार्ट, मॉडल, वाचन, विषय ज्ञान, व्यावहारिक ज्ञान, चर्चा, परिचर्चा, समूह कार्य, सामाजिक तथा जीवन उपयोगी दैनिक कार्यों पर जोर देकर सीखने सिखाने की प्रक्रिया होती है ।

जबकि सामान्य विद्यालय में शोधार्थी नेनिष्कर्षतः पाया कि शिक्षकों के द्वारा ज्यादातर जोर विषयी ज्ञान पर दिया गया है। उनके अनुसार विषयी ज्ञान विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य होना चाहिए क्योंकि व्यावहारिक ज्ञान तो विद्यार्थी विषय ज्ञान को जानने के उपरान्त जान ही लेता है। कार्यानुभव के लिए कागज के फूल, नाव, राखी आदि बनाना सिखाते है। इस के अन्तर्गत पूर्णतः हस्तकौशल पर ज्यादा ध्यान नहीं देते क्योंकि इस प्रकार के विद्यालय में हस्त–कौशल की शिक्षा के लिये अलग से कोई कालांश निर्धारित नहीं किया गया है और सं.संस्कृत, समाज सेवा, सामान्य विज्ञान, सामाजिक शास्त्र, संगीत, महिती तंत्र, शारीरिक शिक्षा, सं.हिन्दी, अंग्रेजी, विज्ञान, भूगोल, इतिहास, गणित, मातृभाषा, चित्रकला आदि विषयों को पाठ्यवस्तु में शामिल है और जिस शिक्षकों द्वारा पढ़ाया जाता है। नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा, मानसिक चौतन्य, शारीरिक योग्यता, कुशलता को बनाये रखने के लिए तथा चरित्र निर्माण के लिए शारीरिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में रखा गया है। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी उपकरण का प्रयोग करके, विषय शिक्षण के प्रति तार्किक चिन्तन करने, अभिसारी चिन्तन करने के अवसर प्रदान करके, अभिप्रेरक चलचित्र, कहानियाँ, शिक्षाप्रद चलचित्र, चर्चा–परिचर्चा करके, अधिगम समस्याओं का समाधान करके, मातृभाषा के साथ–साथ अंग्रेजी, हिन्दी तथा संस्कृत का भी प्रयोग करके शिक्षक अन्तःक्रिया के द्वारा सीखने–सिखाने की क्रिया होती है। पी.पी.टी के माध्यम से, भ्रमण विधि, खेल विधि, कहानी विधि, प्रदर्शन विधि, करके सीखना, प्रोजेक्ट विधि, व्याख्यान विधि, प्रश्नोत्तर विधि, जीवविज्ञान, भौतिक विज्ञान और रसायान विज्ञान के मॉडल बनाकर तथा प्रायोगिक अध्ययन कराकर व्यावहारिकता से अवगत कराकर, पाठ्य पुस्तकें, सन्दर्भ पुस्तकें, समाचार पत्र में दी गयी रचनायें, मार्गदर्शिकाए, कृति पुस्तकाएं, फिल्में, प्रोजेक्टर, गणित विषय में चार्ट, बोर्ड, समूह चर्चा, लेखन, वाचन आदि सीखने–सिखाने के साधनों और माध्यमों पर विशेष जोर देते हुए सुनियोजित तरीके से पाठयोजना का व्याख्यान विधि से शिक्षकों द्वारा सीखने–सिखाने की प्रक्रिया होती है।सामान्य विद्यालय में विषयी ज्ञान, मानसिक क्रियाकलापों, बौद्धिक क्रियाकलापों, सीखने–सिखाने की सम्पूण क्रिया चार दीवारों में बन्द होकर होती रहती है जो एक निर्धारित पाठ्यक्रम पर जोर देकर ही करवायी जाती है। प्रकृति के ज्ञान के लिए बस किताबों में बने चित्रों आदि के माध्यम से व मॉडल को वरीयता देकर सोखने–सिखाने की प्रक्रिया होती है।

अध्ययन का शैक्षिक निहितार्थ–

लघशोध अध्ययन के परिणाम शिक्षकों तथा शिक्षार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होंगे।बुनियादी तालीम की शिक्षण पद्धति के अन्तर्गत संचालित आनन्द निकेतन विद्यालय में शिक्षण की अधिगम शैलियाँ व्यावहारिक एवं स्वयं करके सीखने की ओर विद्यार्थियों को उन्मुख करती ह, परन्तु

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

उनमें विषयी ज्ञान को सैद्धान्तिक रूप में समझनें की क्षमता का विकास कम है। चुंकि सामान्य विद्यालय एवं बुनियादी तालीम विद्यालय की हाईस्कूल की परीक्षायें एक ही पैटर्न पर आयोजित होती है,अतः उनकी शिक्षण शैलियों में परिवर्तन उनकी अधिगम क्षमता को प्रभावित करता है। किसी भी शिक्षा तंत्र में विद्यार्थियों के अधिगम के लिए शिक्षकों की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होती है। शिक्षकों की योग्यता कार्यक्षमता और शिक्षण के प्रति रुचि शिक्षार्थियों के अधिगम को प्रभावित करती है। प्रशिक्षित अध्यापक नीति निर्माताओं द्वारा निर्मित पाठ्यक्रम के अनुरूप कक्षा अन्तःक्रिया को संचालित करते हैं। अतः विद्यार्थियों म अधिगम की प्रवृत्ति का विकास करने मे उनकी विशिष्ट भूमिका होती है। ऐसे में आवश्यक हो जाता है कि शिक्षक वर्तमान शैक्षिक स्थितियों में कक्षा अधिगम को प्रभावशाली बनाने के लिए, आधुनिक तकनीकी एवं शिक्षण पद्धतियों के माध्यम से शिक्षण कार्य को सम्पादित करें। साथ ही अपने प्रशिक्षण का समुचित उपयोग कक्षा शिक्षण में अधिगम को प्रभावशाली बनाने के लिए करें।शिक्षा से सम्बन्धित विद्यार्थियों के लिए यह अनुसंधान एक ऐसे कार्य के रूप में हैं। जो सीखने–सिखाने के लिए निर्मित विभिन्न शैलियों एवं माध्यमों के क्रियान्वयन को वस्तुतःस्थिति और उसके प्रभावों के विभिन्न पक्षों का अध्ययन करता है। विद्यार्थी इस अध्ययन के द्वारा अधिगम की विभिन्न शैलियों एवं विधियों के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकेगें। वे यह भी जान सकेगें कि अधिगम के लिए सीखने–सिखाने की वर्तमान स्थितियों में कौन–कौन से कारक बाधक है और कौन–कौन सी विधियों के द्वारा सकारात्मक अधिगम किया जा सकता है। वर्तमान शैक्षिक परिवेश में अधिगम शैलियों की प्रभावशीलता का अध्ययन करता है, यह लघुशोध स्पष्ट करता है कि किसी भी शैक्षिणिक संस्था में शैक्षिक परिवेश एवं शिक्षण कार्य की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उसका प्रशासन किस प्रकार किया गया है। प्रशासनकर्ताओं द्वारा प्राथमिकता के स्तर पर किस प्रकार की अधिगम शैलियों के प्रयोग का निर्धारण किया गया है तथा समस्त शिक्षण व्यवस्था के प्रबंधन को किस प्रकार व्यवस्थित किया गया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

गुप्ता, एस. पी. एवं गुप्ता, ए. (2009). भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्यायें. इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन. पृष्ठ संख्या. 101–274.

लाल, आर. बी. एवं शर्मा, के. (2014). भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्याये. मेरठः आर. लाल बुक डिपो. पृष्ठ संख्या. 328–331.

सुलैमान, डॉ.मुहम्मद. (2007). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान. दिल्लीः मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स.पृष्ठ संख्या.–304.

मंगल, के.एस.(2010). शिक्षा मनोविज्ञान. दिल्लीः पी.एच.आई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड. पृष्ठ संख्या.–209–10.

अत्री, वि.कु. (1994). भारत में शिक्षा का विकास. नई दिल्लीः सुमित एन्टरप्राइजेज. पृष्ठ संख्या.–122–127.

त्यागी, जी.एस.दास. (2013). भारत में शिक्षा का विकास. आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन्स. पृष्ठ संख्या.–117–122.

लाल, आर. बिहारी. एवंके.के. (2013). भारतीय शिक्षा का इतिहास एवंविकास एवं समस्याएं. मेरठः आर.लाल बुक डिपो. पृष्ठ संख्या.–147–151.

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

शर्मा, आर.एन. (2007). शिक्षा सिद्धान्त एवं आधुनिक भारतीय समाज में शिक्षा. जयपुरः साहित्य चन्द्रिका प्रकाशन.पृष्ठ संख्या.–238–247 एवं 260–312.

जौहरी, बी.पी. एवं पाठक, पी.डी. (2013). भारतीय शिक्षा का इतिहास, आगराःअग्रवाल पब्लिकेशन्स. पृष्ठ संख्या.–306

पचौरी डॉ० गिरीश, (2008). उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक. मेरठः लायल बुक डिपो।

गुप्ता, बद्रीलाल. (2012). सीखने की विधियां. दिल्लीः कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी.

पाण्डेय, डॉ. रामशकल. (2005). शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि. दिल्लीः विनोद पुस्तक मन्दिर।

साहू, लिलेश्वरी. (2016). नई शिक्षा पद्धति, मार्च–2016, अंक–5, पृष्ठ संख्या.–83–85.

शर्मा, कु. नरेन्द्र.(2010). कार्यानुभव शिक्षा शिक्षण. जयपुरः साहित्यागार प्रकाशन.

प्रसाद, राजेन्द्र.(2009). भारतीय शिक्षा. दिल्लीःप्रभात प्रकाशन.

गांधी जी (1953). बुनियादी शिक्षा. अहमदाबादः नवजीवन प्रकाशन मन्दिर.

सिद्धकी, चन्द्रबोस. एवं अग्रवाल, जे.सी. (1994).राष्टीय शिक्षा नीति. दिल्लीः प्रभात प्रकाशन.

माण्टैगोमेरी. एण्ड ग्रोट. (1980). (सुभाष चन्द्र, इग्नू के बी.एड. के छात्र एवं छात्राओं की अधिगम शैली), शोध नवनीत, अंक–02, जनवरी 2014.

तबना, लिओलू. एस. (2003). (सुभाष चन्द्र, इग्नू के बी.एड. के छात्र एवं छात्राओं की अधिगम शैली), शोध नवनीत, अंक–02, जनवरी–2014.

सुलतान, कानवाल. एण्ड खुर्रम (2011). सुभाष चन्द्र, इग्नू के बी.एड. के छात्र एवं छात्राओं की अधिगम शैली), शोध नवनीत, अंक–02, जनवरी–2014.

शबनिल, एम.बी. (2012). सुभाष चन्द्र, इग्नू के बी.एड. के छात्र एवं छात्राओं की अधिगम शैली), शोध नवनीत, अंक–02, जनवरी–2014.

शर्मा, मोहन, मदन.(1973–74). गांधी जी की शिक्षा योजना का एक अध्ययन, एम.एड़. लघुशोध, शिक्षा संकाय, बनारसः हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस.

सुशीला. (1992). महात्मा गांधी के शैक्षिक विचार, पी.एच.डी. शोध, इतिहस विभाग, बनारसः हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस.

कुमार, शैलेन्द्र.(1998). गांधी के विचार और आधुनिक शिक्षा, पी.एच.डी. शोध, सामाजिक विज्ञान संकाय, बनारसः हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस.

सिंह, शिवाजी.(2000). महात्मा गांधी एवं डॉ.भीमराव अम्बेडकर के शिक्षा दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन, पी.एच.डी. शोध, शिक्षा संकाय, बनारसः हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस.

बुनियादी शिक्षा (प्रश्न और उत्तर), सूचना तथा प्रसार मंत्रालय, भारत सरकार, 1955.

जीवन कौशल शिक्षा (आठवीं कक्षा), केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली, 2005.

बुनियादी शिक्षा के दूसरे राष्टीय सेमिनार की रिपोर्ट, हंस भावी(मैसूर) में आयोजित, शिक्षा मंत्रालयः भारत सरकार

बुनियादी शिक्षा योजना, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश, लखनऊ.

गेर टुडे नूर (1972). वैयक्तिक निर्देशन (न्युयार्क, जॉनविले एण्ड सन्स).

एडसिस, सुमस्की. (1968). अवराल सुमस्की के अधिगम शैली में वैयक्तिक अन्तर (न्युजर्सी प्रीन्टाइस हॉल)

फेल्डर, आर.एम. एण्ड स्प्यूरलिन, जे.(2005) ऐप्लीकेशनस, रिलाईबिलिटी, एण्ड वेलिडिटी ऑफ द इनडेक्स ऑफ लर्निंग स्टाईलस ऑफ इंजीनियरिंग एडुकेशनस.

आर.एफ.बेहलर (1974). अध्ययन निर्देशिका, अध्ययन में प्रयुक्त मनोविज्ञान (बोस्टन,हाल्टन,गिफलिन).

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

कैले, वेथ. स्टैपनिक.(1977). अठे ग्रेड के छात्रों में क्षेत्र परतंत्र और स्वतन्त्र अधिगम शैली (हाफस्ट्रा युनिवर्सिटी, डी.ए.आई.ए).

ई, डान. स्टैवार्ट.(1979). प्रतिभाशाली छात्रों में अधिगम शैली निदेशात्मक तकनीक की प्रमुखता, (दी युनिवर्सिटी ऑफ कनेक्टिकट, डी.ए.आई.ए).

जेम्स, बल्मो. सिमर.(1980). वैयक्तिक तथा सामूहिक पाठन विधि का सोचने के स्तर से तुलना (युनाइटेड स्टेट इन्टरनेशनल युनिवर्सिटी, डी.ए.आई.ए).

Johnson, W.M. (1989). A Comparative Analysis of Learning Styles of Black and White College Freshmen, Dissertation Abstracts International, 1990, Vol. 50(12), 3863-A.

Soliday, S.F. (1992). A Study of Personality Types/learning of Secondary Vocational Technical Education Students. Dissertation Abstracts International, 1993, Vol. 53(9), 3187A.

Tucker, D.F. (1983). A study of Preferred Learning Styles of Selected Eight Grade Students. Dissertation Abstracts International, 1993, Vol. 44, 980-A.

Flores-Feist, M.C. (1995). A Comparative Study of Learning Styles of Hispanic and Anglo-Chemistry students, unpublished Doctoral Dissertation, Texas Tech University.

Gallaghar, J.B. (1998). The Differences in Adult and Traditional age Students Learning Styles at Selected Universities, Unpublished Doctoral Dissertation, The Pennsylvania state University.

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies